ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-192-194, YEAR- DEC.2016

मानसिक परिपक्वता का परिचायकय नारी सशक्तीकरण

❑ डॉ० सीमा प्रकाश

समाज में ही नहीं, बल्कि परिवार के अंदर भी महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव को रोकना होगा। महिलाओं को स्वयं से जुड़े फैसले लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए सही मायने में हम तभी नारी सशक्तिकरण को सार्थक कर सकते है। नारी सशक्तिकरण में आर्थिक स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा है। महिलाओं को कोई पछाड़ नही सकता यह उनकी शक्ति है और हमें इस पर गर्व होना चाहिए। आज का युग भौतिकवादी युग है, इसलिए पुरातन काल से चली आ रही मान्यताओं में बदलती परिस्थितियों के कारण परिवर्तन होता रहता है। नैतिकता एवं सामाजिकता के मूल्य इस नवीनता के समक्ष टिंक पाने में असमर्थ है। इस परिवर्तन का प्रभाव नारी पर पड़ा है। समाज–सुधारकों, मनोवैज्ञानिकों एवं राजनीतिज्ञों ने अलग–अलग आन्दोलनों द्वारा समाज में फैली कुरीतियों के प्रति ध्यान आकृष्ट कराया और उन्हें त्यागने की प्रेरणा दी। इस प्रेरणा ने नारी के ह्रदय में विद्रोह की ज्वाला को प्रज्वलित कर दिया और इन कुरूपताओं को नष्ट करने का प्रयास करने लगी, जिससे समाज में स्वतन्त्रता समानता और भाई–चारे के सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा हुई। नवीन विचार धाराओं ने उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर कर दिया।

इन समस्त समाज सुधारकों के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप और असीम संघर्षों के पश्चात् भारतीय नारी शताब्दियों की परतन्त्रता की बेड़ी के बन्धन से मुक्त हुई उसने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, जिससे वह पति सेवा के अतिरिक्त राष्ट्र, जाति एवं कार्य आदि के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझ सकी। अपने अधिकारों के प्रति उसमें जागरूकता उत्पन्न हुई। उसने घर की चारदीवारी को लांघकर परम्परागत सीमाओं को तोड़, समाज में अपने महत्वपूर्ण योगदान द्वारा नवीनता को प्रतिस्थापित किया। पाश्चात्य प्रभावों द्वारा स्वतन्त्र अस्तित्व की स्थापना का प्रयास किया तथा युगों से पुरूषों तले दबे अधिकारों को चुनौती दी। शिक्षा ने उसमें आत्मविश्वास का संचार किया। आज की नारी अपने नवीन रूप में पुरातन मूल्यों को नकारने एवं सामाजिक आग्रहों को तोड़ने की चेष्टा में रत है। उसकी क्षमताओं पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा ने कहा है – "वह अपनी कोमल भावनाओं को जीवित रखकर भी कठिन से कठिन उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकती है, दुर्वह कर्तव्य का पालन कर सकती है और दुर्गम से दुर्गम कर्मक्षेत्र में ठहर सकती है। आज की नारी के सम्बन्ध में यह उक्ति अत्यन्त उपयुक्त है। उसकी इस उन्नति को देखते हुए यदि 'महिला–जागरण का युग' कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः कहा जा सकता है कि आज की नारी पुरूष के विस्तृत अधिकार क्षेत्र की प्राचीरों को तोड़ने में प्रयासरत है तथा स्वेच्छानुसार अपने व्यक्तित्व निर्माण की ओर अग्रसर है।

बीजिंग सम्मेलन, 2001 में राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण नीति बनायी गयी नौवीं पंचवर्षीय योजना का मूल उद्देश्य महिलाओं को अधिकार सम्पन्न बनाना था। नारी सशक्तीकरण शब्द का प्रयोग सरकारी तन्त्र में हाल में ही शुरू हुआ है। नारी सशक्तीकरण का अर्थ है दृ सबलता, सुयोग्यता, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास। इस प्रकार सशक्तीकरण एक मानसिक अवस्था है जिसकी पहली कसौटी है निर्भयता। यह निर्भयता कुछ विशेष आन्तरिक कुशलताओं और सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर है।

स्वर्गीय इन्दिरा गाँधी ने कहा था– "महिलादृ मुक्ति" भारत के लिये शौक की वस्तु नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र भौतिक, बौद्धिक

❑ एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा– मनोविज्ञान विभाग, जे0डी0वी0एम0पी0जी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0), भारत

एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक सन्तोषजनक जीवन की ओर अग्रसर हो सके।" प्रख्यात विचारक जॉन डी0वी0 ने अपनी किताब 'फ्रीडम एवं कल्चर' में लिखा है – स्वतन्त्रता एवं सक्षमता एक दूसरे से बहुत घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हैं। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक ताकत का सही उपयोग तभी बन पड़ता है जब उनका संचालन स्व अर्थात् आत्मा के विधान से हो।

दिन प्रतिदिन नारी का दृष्टिकोण परिवर्तित होता जा रहा है, उसने अपनी मानसिक परिपक्वता एवं व्यक्तित्व विकास के लिये आर्थिक स्वावलम्बन की बात सोची और उसने अपने पैरों पर खड़े होने में सफलता प्राप्त कर ली। आर्थिक स्वाधीनता के साथ ही मानसिक परिपक्वता के आधार पर पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव ने नारी का रूप परिवर्तित होने में सहायता की। आज नारी पति द्वारा उपेक्षा पाकर किसी अन्य पुरूष का सहारा ले सकती है। यह उसकी मानसिक परिपक्वता एवं चिन्तन प्रवृत्ति को परिलक्षित करता है, जो आधुनिक नारी की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है।

इक्कीसवीं सदी महिलाओं की सदी है। इसी परिवर्तन की आहट है कि महिलायें सफलता के शिखर पर आरूढ़ हो रही हैं। कामयाबी के साथ उनकी सामाजिक एवं आर्थिक तस्वीर लगातार बदल रही है। समाज के लगभग सभी पुरूष वर्चस्व वाले क्षेत्रों में महिलाओं ने शानदार प्रवेश किया है। पिछले दो दशकों में तो वैश्विक परिदृश्य में इनका ग्राफ कितना ऊँचा उठा है अब तो कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें केवल महिलाओं का ही चयन किया जाता है, वही क्षेत्र कभी पुरूषों के लिए जाने जाते थे। परिवर्तन का यह नया दौर अनोखा एवं अद्भुत है। यह नया इसलिए भी है कि महिलायें समाज की तमाम बेड़ियों एवं विसंगतियों को पार करके आगे बढ़ी हैं। जब तकनीकी प्रगति के कारण व्यवसाय सरल एवं पारदर्शी हुआ तो धीरे–धीरे इमसें महिलाओं की भूमिका बढ़ने लगी। महिलाओं की सूझ–बूझ एवं बौद्धिक प्रतिभा इसमें काम आने लगी।

शैक्षणिक क्षेत्र में इस सदी की महिलाओं की अधिक प्रगति देखी गयी। परिणामस्वरूप महिलाओं ने उच्च शिक्षा ग्रहण कर सरकारी विभागों में प्रवेश किया और उच्चतम् पदों को सुशोभित भी किया। प्रशासनिक क्षेत्र में किरन बेदी का नाम गर्व से लिया जा सकता है। लेखन के क्षेत्र में मृदुला गर्ग, महादेवी वर्मा, ममता कालिया, मृणाल पाण्डेय आदि का वर्चस्व रहा है। पी0टी0 ऊषा, बुला चौधरी, सानिया मिर्जा आदि ने खेलकूद की दुनिया में नारी जाति का सम्मान बढ़ाया है। इसी प्रकार फिल्मी दुनिया एवं संगीत की दुनिया में मीना कुमारी, हेमा मालिनी, माधुरी दीक्षित, प्रीती जिण्टा, लता मंगेशकर, आशा भोसले, अलका याज्ञनिक, सुनिधी चौहान आदि उल्लेखनीय हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आज की नारियाँ बदलती मानसिकता से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सार्थक संरचनात्मक उपस्थिति दर्ज करा रही है। कला की दुनिया से लेकर खेलकूद और सेना तक में नारियाँ हजारों की संख्या में महत्वपूर्ण पदों पर सुशोभित हैं।

उपरोक्त सभी क्षेत्रों में दृष्टिपात करने से यह सत्य है कि आज की नारी जीवन के प्रत्येक मोड़ पर और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अदम्य क्षमता एवं मानसिक परिपक्वता का परिचय दे रही है फलतः पुरूषों द्वारा नारी के मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न में भी कमी आयी है।

इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दस ऐसी महिलाओं को चुना गया है, जो भारत के किसी भी पुरूष प्रतिष्ठित पद से श्रेष्ठ एवं ऊँचा है। इनका चयन का आधार, नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, योजना सम्बन्धी विचार, आर्थिक सम्बन्ध बनाने आदि था। इनमें जेंटा की प्रिया, हीरा नंदिनी, मिना गणेश, रेखा मेनन, देना रविचन्दर तथा कम उम्र की जेसी पाल शामिल हैं। ये महिलायें किसी भी कम्पनी को विश्व स्तर का बनाने के लिए सक्षम हैं। इन्हें देखकर लगता है जो कल तक केवल अपनी चहारदीवारी में सिमट कर रह गयीं थीं आज अपनी मानसिकता से बुलन्दियों को अपने पंखों से छूने लगी हैं। यही ऊँची उड़ान काबिले तारीफ है।

निष्कर्ष– महिला सशक्तिकरण को अपने स्वयं के व्यक्तिगत विकास की जिम्मेदारी लेने का अधिकार देता है । जैविक और नैतिक दोनो संदर्भ में, महिलाओं के पास एक परिवार के भविष्य और विकास के साथ साथ पूरे समाज को विकसित करने के लिए अधिक क्षमताए है । इस प्रकार हर महिला को एक

व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से विकसित होने और अपनी पसंद बनाने में मदद करने के लिए समान अवसर दिया जाना चाहिए । क्यूँकि महिलाओं में अपने अपने जीवन को आकार देने की नही बल्कि दुनिया को आकार देने की क्षमता है । महिला सशक्तिकरण के साथ शुरू करने के लिए समान अवसर और अपने निर्णय लेने का अधिकार मूल होना चाहिए ।यह सभी उपलब्धियाँ महिलाओं की दूरदर्शिता, सूझ–बूझ, साहस, महत्वाकांक्षा और ऊर्जा से भरपूर मनःस्थिति की सत्यता को दर्शाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० सवलिया बिहारी वर्मा, डॉ0 एम0एल0 सोनी, डॉ0 संजीव गुप्ता दृ 'महिला जागृति और सशक्तीकरण', अविष्कार पब्लिशर्स, पेज नंः 287–302, 303.
2. डॉ0 नीता रत्नेश – 'भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में नारी', पेज नं0 : 250–252.
3. डॉ० रेवा कुलकर्णी दृ 'हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी', पेज नं0 : 284.
4. अखण्ड ज्योति, दिसम्बर, 2008 पेज नं0 : 8–10
5. योजना अप्रैल 2002, पेज नं0 : 38–41.